साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 37, मई(द्वितीय), 2018

पुस्तक समीक्षा

समीक्षित पुस्तक:
माँ की ममता (कहानी संग्रह)

लेखिका: सरिता सुराणा

समीक्षक: डॉ० अनिल चड्डा

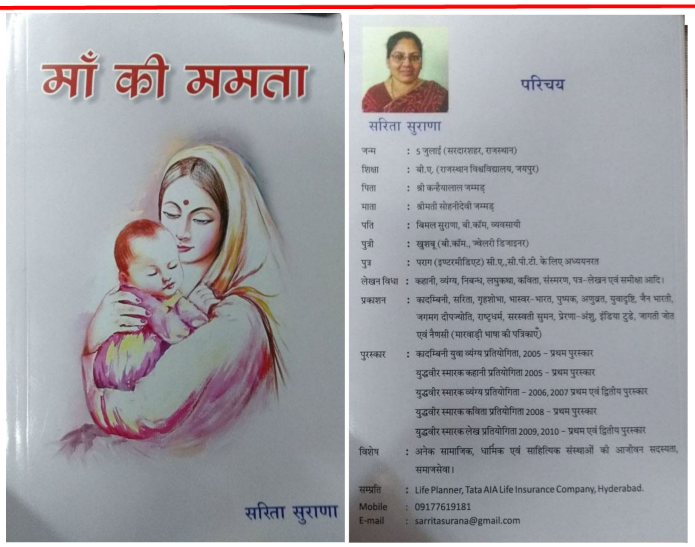

सरिता सुराणा के कहानी संकलन 'माँ की ममता' में 2001 में हैदराबाद में उनके स्थापित होने के बाद की लिखी गई कहानियों का संकलन है। समय-समय पर लिखी गई अपनी कहानियों में उन्होंने सम्बन्धों की ऊष्मा को उजागर करने का प्रयास किया है।

संकलन की पहली कहानी 'स्नेह-दीप' उन्होंने माता-पिता और बेटे के बीच प्रेम की गहराई को प्रदर्शित किया है, कैसे वह बेटा जिसे वह पाल-पोस बड़ा करते हैं, उसकी पढाई-लिखाई पर जीवन की कमाई लगा देते हैं, कैसे उनसे विमुख हो जाता है। इस कहानी के अंत में उन्होंने अपनी संवेदना को इन शब्दों में उंडेला है:-

"इधर मिटटी के दीयों की रौशनी ठंडी पड़ गई थी, उधर सम्बन्धों की ऊष्मा भी ठंडी पड़ गई थी।.....अपने आगमन की झूठी सूचना दे कर उनके बेटे ने न केवल उनकी भावनाओं

को ठेस पहुँचाई थी अपितु हमेशा के लिये दीवाली के त्योहार का मजा किरकिरा कर दिया था।"

कितनी आसानी से उन्होंने यह अभिव्यक्त कर दिया था कि निस्वार्थ प्रेम और सेवा के बदले में बेटे ने अपने माँ-बाप को तमाम उम्र के लिए एक पीड़ा थमा दी थी।

रिश्तों की गहराई को इसी तरह से दर्शाते हुए अपनी दूसरी कहानी 'नई जिंदगी' में उन्होंने पति-पत्नी के सम्बन्धों को मूल्यों के तराजू पर तौला है। इस कहानी में बड़े ही सहज ढंग से उस पति को जिसने अपनी पत्नी को पत्नी का मान-प्यार नहीं दिया था, अंत में परिस्थितियोंवश अपने किये पर पछतावा होते हुए दिखाया है। उस पति को जिसने पत्नी की महत्ता को नकार दिया था अंत में कहना ही पड़ा -

"मैं अपने किये पर बहुत शर्मिंदा हूँ। आज मुझे यह एहसास हो गया है कि एक पत्नी ही पतिव्रता हो सकती है। बाजारू लडकियाँ भले ही किसी को क्षणिक सुख प्रदान कर दें परन्तु इनका कोई ईमान या विश्वास नहीं होता। मैं आज तक शीतल की उपेक्षा करके अपने जीवन के अमूल्य समय को नष्ट किया....."

जहाँ अपनी कहानी 'स्नेह-दीप' में उन्होंने एक बेटे का माता-पिता के प्रति रूखापन दर्शाया है, वहीं अपनी कहानी 'सिंदूर की कीमत' में एक बेटी का, जो अपनी शादी तक तोड़ देती है, अपने पिता के प्रति अगाध प्रेम दर्शाया है। बेटी यहाँ कह रही है-

"आखिर कब तक एक बेटी का बाप अपनी बेटी की खातिर अपनी बलि देता रहेगा? क्या फायदा हुआ मेरी इस पढाई लिखाई का? आपको तो मेरे लिये दोहरा दहेज़ जुटाना पड़ा, पहले पढाई के खर्च के रूप में और अब शादी के लिये। कोई लडके वालों से लड़की के पालन-पोषण और पढाई का खर्च क्यों नहीं मांगता?....."

अपनी इस कहानी में एक ओर तो उन्होंने यह बताने की कोशिश की है कि हमारे समाज में लड़कों को तरजीह तो दी जाती है परन्तु काम अंत में लडकियाँ ही आती हैं, दूसरी और दहेज़ की सामजिक बुराई को भी उजागर करने की कोशिश की है।

आपसी सम्बन्धों की जटिलता को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने अपनी कहानी 'चर्चा का विषय' में कैसे एक महानगर में अकेली रहने वाली भोली-भाली लड़की प्रेम में ठगी जाती है परन्तु जीवन

से हार नहीं मानती है को खुबसुरत ढंग से दर्शाया है। अपने मन में जीवन को समाप्त करने के विचार को वह झटक कर वह कहती है -**“ नहीं, वह ऐसा नहीं होने देगी। वह दुनिया के सामने सच्चाई ला कर रहेगी। चाहे परिणाम जो भी हो।**.....” विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं माननी चाहिये, इस बात का उन्होंने असरदार लड़की के माध्यम से असरदार तरीके से वर्णन किया है।

अपनी सभी कहानियों में उन्होंने सम्बन्धों की गरिमा, संवेदना, सामाजिक बुराईयों को उजागर करने की कोशिश की है। कुल मिला कर सरिता सुराणा का कहानी संग्रह उनकी बहुत ही खूबसूरत कहानियों का संकलन है, जिसे अवश्य ही पढना चाहिये।

समीक्ष्य पुस्तक: माँ की ममता (कहानी संकलन)
लेखिका: सरिता सुराणा
प्रकाशक: सरिता सुराणा, संजीवय्या हाउसिंग सोसाइटी, प्लाट नंबर ३३, फर्स्ट फ्लोर,
ताडबंद हनुमान मंदिर के सामने, सिख विलेज, सिकन्दराबाद-500009
हैदराबाद, तेलंगाना स्टेट
संस्करण: 2017
समीक्षक: डॉ० अनिल चड्डा, सम्पादक, साहित्यसुधा
मूल्य: 200/-

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें